Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 4, July-Aug – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 14/08/2020 Accepted on : 27/08/2020 Publication Date: 31/08/2020

भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण : एक विश्लेषण

श्रीमती राखी गोयल
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।
Email - rakhigupta777@ymail.com

सारांशः मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभ से ही यह स्वीकार किया जाता रहा है की मनुष्य और प्रकृति एक दुसरे के पूरक हैं और इन्हें अलग करना संभव नहीं है। भारत में वैदिक काल से ही मनुष्य जल, थल, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, वर्षा, जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों की पूजा करता रहा है। यह हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ थीं, जो पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से, वैज्ञानिक एवं तर्क-संगत तरीके से हमारे ऋषि-मुनिओं द्वारा बनायी गयीं थीं। परन्तु कालान्तर में मनुष्य ने स्वार्थी, बाजारवादी, भोगवादी प्रवृति अपनाने के कारण प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ की, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ने जन्म ले लिया। भारत के पास पर्यावरण संबंधी समस्याओं का समाधान है और वह है भारतीय सांस्कृतिक परम्पराएँ जो हमारे पूर्वजों ने बनायी थीं। नई पीढ़ी को इन परम्पराओं का पूर्ण विश्वास के साथ निर्वहन करना है और अपने पर्यावरण को स्वच्छ एवं आनंदमय बनाये रखना है। पर्यावरण के लिए यही भारतीय चिंतन इस शोध-पत्र में विश्लेषण के साथ प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य बिन्दूः पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण, भारतीय संस्कृति, परम्पराएँ, वेद-पुराण, भारतीय चिन्तन।

१ प्रस्तावनाः-

विस्तृत रूप में पर्यावरण का अर्थ है धरती एवं आकाश जहाँ सजीव एवं निर्जीव का अस्तित्व पाया जाता है। अतः पर्यावरण का आशय है पशु-जगत्, वनस्पति-जगत्, जल-जगत् एवं वायु, नदी, पहाड़, खनिज संपदा जो प्रकृति की देन हैं। सजीवों में केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो अन्य प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है। मनुष्य के अलावा अन्य प्राणियों से पर्यावरण को कोई खतरा नहीं है, क्योंकि अन्य प्राणी केवल भोक्ता हैं। मनुष्य ही अपनी बुद्धि का गलत उपयोग कर अपने-अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु अपने पर्यावरण के साथ छेड़-छाड़ करता है। मनुष्य के द्वारा पर्यावरण के साथ छेड़-छाड़ करने से पर्यावरण का निर्माण करने वाले घटकों में विकृति आती चली जाती है जिससे पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण जो हानि होती है वह सभी सजीव प्राणियों को भुगतनी पड़ती है। इस प्रकार कुछ मुठ्ठी भर लोग अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु संपूर्ण जगत के लिए समस्या उत्पन्न कर देते हैं। अब हालात इतने बद्तर हो चुके हैं की पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ने वैश्विक समस्या का रूप ले लिया है। अन्य जीवों के साथ-साथ खुद मनुष्य के अस्तित्व के लिए संकट पैदा हो गया है। यदि इस समस्या को अब गंभीरता से नहीं लिया गया तो मनुष्यों को गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। इसलिए सभी देशों की सरकार, स्वयंसेवी संस्थायें, अंतर्राष्ट्रीय संघ इस बात पर अडिग हैं की अब पर्यावरण संरक्षण करना ही होगा। पर्यावरण संरक्षण हेतु सभी को ठोस कदम उठाने ही होंगे। अब सभी देश पूर्ण मनोयोग से पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रतिबद्ध हो गए हैं।

भारत भी पर्यावरण संरक्षण हेतु अपनी भूमिका निभाने के लिए पूर्णतया रजामंद है। भारत ऋषि-मुनियों का देश था और विश्व गुरु की पदवी रखता था। भारत की संस्कृति-सभ्यता बहुत प्राचीन है, यहाँ पर्यावरण प्रदूषण होगा कोई सोच भी नहीं सकता है। भारत देश की पवित्र धरा पर स्वयं भगवान राम-कृष्ण ने जन्म लिया है, यहाँ की धरती अशुद्ध हो जाये यह किसी भी भारतीय के लिए आत्मसम्मान को ठेस पहुचाने वाली बात होगी। भारतीय चिंतन में धरती को माता एवं आकाश को पिता का दर्जा दिया गया है। हमारे पूर्वज स्वयं देवी-देवता माने गए हैं जिन्होंने इस धरती एवं आकाश को शुद्ध रखने के लिए विभिन्न परम्पराएँ बनायी हैं जिनकी पालना ही भारतीय संस्कृति-सभ्यता है, जो अपने आप में उत्कृष्ट है। भारतीय संस्कृति में अपने पर्यावरण को आनंदमय बनाने का प्रबंध हमारे पूर्वजों ने किया हुआ है। हमें केवल उसकी अनुपालना सुनिश्चित करनी है।

२ शोध का उद्देश्यः

यह विश्लेषण करना कि प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का प्रबंध संभव है।

३ शोध प्रविधिः

इस शोध पत्र में द्वितीयक स्रोतों यथा ग्रंथों, पांडुलिपियों, शोध-ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं, वेबसाइट, समाचार-पत्रों में प्रकाशित सामग्री का अन्वेषण किया गया है।

४ भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण प्रबंधः-

जन्म से ही मनुष्य का नाता प्रकृति से जुड़ जाता है, इसी कारण प्रकृति की अराधना तथा पर्यावरण का संरक्षण करना हमारा पुरातन भारतीय चिंतन है।[1] भारत के ऋषि-मुनियों द्वारा विरचित वेदों, पुराणों, उपनिषदों तथा अनेक धार्मिक ग्रंथों में पर्यावरण का चित्रण हमें प्राप्त होता है। हमारे भारतीय ऋषि-मुनि इतने उच्च कोटि के वैज्ञानिक थे कि उन्होंने जड़-चेतन सभी तत्वों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए विधान बनाये हैं।

मनु स्मृति में पर्यावरण संरक्षण चिंतनः- भारतीय चिन्तन परम्परा में जल को देवता मानते हुए नदियों को जीवनदायिनी कहकर सम्बोधित किया गया है। मनुस्मृति में कहा गया है कि जल में मल-मूत्र, थूक अथवा अन्य दूषित पदार्थ, रक्त या विष का विसर्जन न करें। "मनुस्मृति के अनुसार तालाबों, पोखरों, नहरों एवं अन्य जलाशयों से गाँव का सीमांकन किया जाता था। धर्मशास्त्रों में जलाशयों को क्षति पहुँचाने वालों के लिए कठोर दंड का विधान है। मनु का कथन है कि तालाब को क्षति पहुँचाने वाले को पानी में डुबो दिया जाये अथवा सिर काटकर जान से मार देना चाहिए"।[2]

वेदों में पर्यावरण संरक्षण के विधानः- वैदिक ऋषियों द्वारा जल की प्राप्ति के लिए भी कामना की गयी है, जैसा कि अथर्ववेद के भूमि सूक्त में उल्लेख आया है कि हमारे शरीर में शुद्ध जल प्रवाहित होता रहे। हमारी नदियों के बारे में कहा गया है कि गंगा के दर्शन मात्र से ही मुक्ति मिल जाती है। "गंगा की पूजा देवी के रूप में की जाती है। गंगा के मंदिर भी हैं। अन्य देवों की भाँति रोली, अक्षत, धूप, नैवेद्य आदि द्वारा नदी पूजन किया जाता है।यह प्राचीन परम्परा का अनुकरण है। नदियों के जल में स्नान करने से पाप नष्ट हो जाते हैं"।[3] सभी प्रकार के जल स्रोतों को देवता मानकर पूजा करने का विधान हमारी भारतीय संस्कृति में निहित है, ताकि इन जल स्रोतों का संरक्षण किया जा सके। हमारी पवित्र नदियों पर ही देश की संस्कृति व आर्थिक ढांचा टिका हुआ है। जल ही जीवन है।

जल, वायु, अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा को भारतीय संस्कृति में देवता कहा गया है और इनका अपमान करना वर्जित है। "ऋग्वेद में वायु के गुण बताते हुए कहा गया है कि शुद्ध ताजा वायु अमूल्य औषधि है। भारतीय जीवन शैली मे यज्ञ की व्यवस्था है जो वायु मण्डलीय प्रदूषण को दूर कर पर्यावरण को शुद्ध रखता है।"घी, शक्कर, मुनक्का, चांवल, किशमिश, नारियल एवं सूखे मेवे आदि को अग्नि में जलने से जो धुआं होता है उसमें वायु को शुद्ध करने की बड़ी शक्ति होती है। यज्ञ की धुआं से क्षय,चेचक, हेजा,जीर्णज्वर आदि रोगों के विषाणुओं नष्ट हो जाते हैं। पर्यावरण को अग्निहोम द्वारा अनुकूल बनाया जा सकता है"।[4]

भारतीय चिंतन में मनीषियों ने पृथ्वी को मातृशक्ति के रूप में माना है और स्वयं को उसके पुत्र के रूप में- माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः।[5] पर्यावरण के संरक्षण के लिए प्रकृति तथा मानव प्रवृत्ति में उचित सामंजस्य की आवश्यकता है ताकि प्राकृतिक संसाधनों का अन्धा-धुंध दोहन न हो। वेदों में इस तथ्य का वर्णन उपलब्ध है कि हम प्रकृति से उतना ग्रहण करें जितना हमारे लिए आवश्यक हो तथा प्रकृति की पूर्णता को क्षति न पहुंचे। हमें संपोषित विकास करना होगा जिसका वर्णन वेदों में पहले ही कर दिया गया था- "हे भूमि माता! मैं जो तुम्हें हानि पहुंचाता हूं, शीघ्र ही उसकी क्षतिपूर्ति हो जावे"। अथर्ववेद में कहा है- भोजन और स्वास्थ्य देने वाली सभी वनस्पतियां इस भूमि पर ही उत्पन्न होती हैं। पृथ्वी सभी वनस्पतियों की माता और मेघ पिता हैं, क्योंकि वर्षा के रूप में पानी बहाकर यह पृथ्वी में गर्भाधान करता है। भारतीय संस्कृति में धार्मिक कार्यों में पृथ्वी का पूजन किया जाता है और धरती माता के प्रति अगाध श्रद्धा व्यक्त की जाती है।

पुराणों में वृक्षों की पूजा का वर्णनः- वृक्षों को देवताओं के निवास स्थान के रूप में उनके साथ सम्बंधित कर देवतुल्य बनाया गया। भविष्योत्तर पुराण, मत्स्य पुराण, स्कंध पुराण के हेमान्दिव्रत खंड, प्रबंध काव्यों में वृक्षों की महिमा का गुणगान मिलता है। "पद्मपुराण में अमृत की बूदें धरा पर गिरने से कल्पवृक्ष की उत्पत्ति होना स्वीकारा गया है। ऐसी मान्यता है कि मनुष्य जिन वृक्षों का आरोपण करते हैं वो परलोक में उनके पुत्रों के रूप में जन्म लेते हैं। ऋग्वेद के अनुसार यज्ञ कर्म के लिए खेजड़ी जरुरी समिधा मानी जाती है। पद्मपुराण के अनुसार पीपल की परिक्रमा से आयु लम्बी होती है"।[6]

जैन धर्म में पर्यावरण चेतनाः- "जैन धर्म में अहिंसा की प्रमुखता को स्थापित करते हुए राजवार्तिक में स्पष्ट कहा गया है कि केवल अहिंसा की यह अवधारणा जो सर्व स्वीकृत जगत में हमें मित्रभाव में जोड़ती है तथा शत्रु भाव का विनाश करती है।

सदाचरण से पर्यावरण की रक्षा होती है दुराचरण से पर्यावरण प्रदूषित होता है।चित्त की चंचलता पर्यावरण को दूषित करती है तथा चित्त की स्थिरता पर्यावरण को शुद्ध रखती है"।[7]

रामायण में प्रकृति की महिमाः- वाल्मीकीय रामायण भी पर्यावरण चेतना से ओत-प्रोत रही है। रामायण में पर्यावरण के तीनों क्षेत्रों जल मंडल, वायु मंडल, स्थल मंडल के प्रदूषण निवारण के लिए उपाय बताए गए है। इनमें शुद्ध एवं निर्मल जल की अलौकिकता और पवित्रता का समुचित वर्णन किया गया है। और जल को दूषित करने वालों के लिए दंड का भी विधान किया गया है। वायु के प्रकुपित और प्रदुषित होने के दुष्परिणाम भी इस महाकाव्य में वर्णित है।

कालिदास साहित्य भी पर्यावरण चेतना से भरा हुआ है। इसमें प्रकृति को कवि ने मानव जाति के लिए श्रेष्ठ बताया है जो प्रमाणिक भी है। कालिदास ने तो अपने महाकाव्यों में प्रकृति के सहारे ही सभी बातें रखी है। मेघदूतम इसका बेहतर उदहारण है।

श्रीमद्भगवतगीता में पर्यावण संरक्षणः- भगवान कृष्ण ने गीता में विभूतियोग में वृक्षों की महिमा का बखान किया है। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है-'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां' अर्थात समस्त वृक्षों में मैं पीपल का पेड़ हूं। आज भी भारतीय समाज में लोग पीपल के पेड़ की पूजा करते है और आस्था के साथ जल अर्पित करतें हैं। पीपल की पूजा करने से संतान प्राप्ति होती है एवं पितरों की आत्मा को शांति मिलती है। पीपल और तुलसी में दिव्य औषधीय गुण विद्यमान हैं। वायुमंडलीय शुद्धिकरण की दृष्टि से भी पीपल और तुलसी अत्यधिक ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। इनके पास हानिकारक जीवाणु-विषाणु नहीं पनपते हैं। धार्मिक दृष्टि से शमी वृक्ष में लक्ष्मी का वास माना गया है। इसका उपयोग मांगलिक कार्यों में किया जाता है।

हमारी संस्कृति वनों-तपोवनों में फली-फूली है, हम वृक्षों को देने वाले अर्थात् देवता समझकर कृतज्ञ भावना के उज्जवल आदर्श को प्रस्तुत करते हैं। महाकवि रसखान, तुलसीदासजी ने भी अपने काव्य में पेड़ों का वर्णन किया है। अशोक महान ने लोकहितार्थ पेड़ लगवाए। भारत में दुर्गा अष्ठमी के दिन दूब की भी पूजा करने का विधान है। भगवान शिव पर बेलपत्र चढ़ाया जाता है, भगवान विष्णु की पूजा केले के बिना नहीं होती है। भारतीय समाज में अधिकांश लोग शाकाहारी है इसलिए यहाँ की अर्थव्यवस्था कृषि एवं पशुपालन पर आधारित है। यहाँ तो ग्रामीण क्षेत्रों में दूर-दूर तक हरे-भरे लहलाते खेत नजर आते हैं। भारतीय चिकित्सा पद्धति "आयुर्वेद" पूर्णतया वनों में मिलने वाली जड़ी-बूटियों पर आधारित है। यहाँ पहाड़ों को भी जनमानस की धार्मिक आस्था से जोड़ा गया है और उनको प्रमुख त्योहारों पर पूजा जाता है, गौवर्धन पर्वत की परिक्रमा एवं गौवर्धन पूजा इसका उदहारण है। ऋषियों ने बताया है कि जो व्यक्ति पीपल, नीम और बरगद के एक-एक, इमली के दस, कपित्थ, बिल्व और आंवला के तीन-तीन और आम के पांच पेड़ लगाता है, वह कभी नरक में नहीं जाता। यह सब परम्पराएँ शुद्ध वायु प्राप्ति के प्रयोजानार्थ ही तो हैं।

"श्रीमद्भगवतगीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि पहाड़ो में हिमालय, वृक्षों में पीपल, हाथियों में ऐरावत, गौओं में कामधेनु, नागों में शेषनाग, पशुओं में मृगराजसिंह, पक्षियों में गरूड़, मछलियों में मगर, पवित्र करने वालों में वायु एवं नदियों में श्री भागीरथी गंगाजी स्वयं हैं"।[8]

वन्य जीवों की उपयोगिता के कारण उनका संरक्षण भारतीय संस्कृति का विशिष्ट और अभिन्न अंग रहा है। गाय में छत्तीस करोड़ देवी-देवताओं का निवास माना गया है। गाय का दूध बहुत ही गुणकारी होता हैं। गौवंश का संवर्धन हिन्दुओं की परम्परा हैं। गाय को भी माता का दर्जा दिया गया है और भोजन बनाते समय पहली रोटी गाय के निमित्त बनायी जाती है। बैल यहाँ किसान का साथी हैं, ऊंट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है जोकि रेगिस्तान में बसने वाले लोगों के जीवन का आधार है। भारत में श्राद्ध में कौआ भी पूज्य है, यह माना जाता है रामायण कागभुसंडजी के मुहं से निकली है। भारत में शीतला अष्टमी को कुत्ते का पूजन होता है। पशुओं को उनके वाहन के रूप में देवी-देवताओं के साथ पूजा जाता रहा है। हंस सरस्वती के साथए सिंह महाकाली के साथ, इंद्र हाथी के साथ, चूहा गणेश के साथ पूजा जाता है। मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है जिसकी हत्या अपराध है। घोड़े को प्रगति का प्रतीक माना गया है, प्राचीन काल में घोड़ों को घी पिलाया जाता था। आदि देव भगवान शिव सर्पों को धारण किये हुए हैं, नागपंचमी को सर्पों की पूजा करने की प्रथा है। ज्योतिष में राशियों के नाम पशुओं के नाम पर हैं। अशोक स्तंभ पर वन्य-जीवों की सुरक्षा का निर्देश भी उपलब्ध है। ये सभी उदहारण इस तथ्य को प्रमाणित करते है की भारत में वन्य जीवों का मनुष्य के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है और उनकी रक्षा हमारा धर्म है। भारतीय संस्कृति मानव को पशु-पक्षियों से संवेदनात्मक एवं भावनात्मक संबंध रखने का संदेश देती है। रामायण में इसका प्रमाण मिलता है की किस प्रकार भगवान राम ने वानर भालुओं की सेना बनाकर रावण पर विजय प्राप्त की। हनुमानजी तो आज भी प्रकट देवता के रूप में पूरे

भारत में आस्था के साथ पूज्य हैं। "पर्यावरण और पशुधन हमेशा से भारत के आर्थिक चिंतन का बहुत ही महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा है"।[9]

सनातन धर्म में विवाह को संस्कार माना गया है। इसका आरंभ द्वार-पूजन, भूमि-पूजन, जल-पूजन, कूप पूजन के रूप में मिट्टी-पूजन, माड़ों-पूजन में बांस का रोपण, दूर्वा-कुश आदि को नवगृह पूजन में प्रयुक्त करना, पूजा के कलश में सात नदियों का जल आदि नदी व भूमि को पवित्र बनाए रखने की प्रेरणा देता है। भारतीय संस्कृति में मनुष्य के जन्म संस्कार से लेकर अंतिम संस्कार तक प्रकृति को पूरा आदर-सम्मान दिया गया है।

भारतीय चिकित्सा पद्दति में यह कहा गया है की मनुष्य का शरीर पांच तत्वों जल, थल, पावक, गगन, समीर से मिलकर बना है और हमारा पर्यावरण भी इन्ही पांच तत्वों से मिलकर बनता है। यदि इन पांच तत्वों की संरचना में विकृति पैदा हो जाये तो यह तथ्य कटु सत्य है की मनुष्य के शारीर में भी विकृति आ जायगी अर्थात हम अस्वस्थ हो जायेंगें। भारतीय संस्कृती में पहला सुख निरोगी काया को कहा गया है, अर्थात प्रकृति में विकृति आते ही मनुष्य का सुख-चैन छिन जायेगा। मनुष्य तो सुख की तलाश में दौड़ता रहता है। इसलिए ही भारतीय संस्कृति में प्रकृति को पूज्य माना गया है। प्रकृति को कहीं सखा, कहीं प्रेमिका, कहीं माता-पिता और कहीं देवी-देवताओं के तुल्य माना गया है। भारतीय संस्कृति में रचा-बसा व्यक्ति इस पूज्य पर्यावरण को क्षति पहुँचाने की सोच भी नहीं सकता है। यह स्पष्ट है मनुष्य पर्यावरण को जाने-अनजाने में क्षति पहुँचाता है।

भारत की अत्यधिक प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराएँ रही हैं जो वैदिक काल से चली आ रहीं हैं। पर्यावरण के संरक्षण में प्राचीन भारतीय परम्पराओं का विशेष योगदान है। वैसे तो हमारी भारतीय चिन्तन परम्परा में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा अनादि काल से चली आ रही है और सम्भवतः यही कारण है कि अपने देश में पर्यावरण प्रदूषण एवं पारिस्थितिकी असंतुलन की समस्या अन्य देशों से कम है। "हमारे मनीषियों ने प्रकृति की समग्र शक्तियों को जीवन दायिनी स्वीकार करते हुए उन्हें देवत्व का स्थान प्रदान किया है।"वर्तमान वैश्विक युग में बदलते सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश से लोगों में पारम्परिक लोक संस्कृति के प्रति उदासीनता दिखाई देती है"।[10] आधुनिक संस्कृति प्राचीन हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियो तथा पाश्चात्य संस्कृति का समन्वित रूप है। सोंदर्यमय दृष्टिकोण बनाकर जीवन के विषय में विचार करना, स्वयं के अहम् की वृद्धि, और निजी सुख की अभिलाषा आधुनिक संस्कृति है। प्रकृति और राज्य की परम्पराओं-प्रथाओं का तिरस्कार आधुनिक संस्कृति का उद्देश्य है। संस्कृति के विकास व परिवर्तनों की कई प्रक्रिया से स्वच्छता भी हनिग्रस्त हुई है। पश्चिमी सभ्यता अपनाने के कारण ही वर्तमान में पर्यावरण तेजी से दूषित हो रहा है। इसका संरक्षण भारतीय चिंतन से ही संभव है। अतः संस्कृति को बचाना उन सभी लोगों की जिम्मेदारी है, जो खुद को भारतीय मानते हैं। "भागवत धर्म में अन्तःमन को ही समस्त भोगों की लालसा का मुख्य और मूल कारण माना गया हैं और यही प्रवृत्ति, प्रकृति के विनाश का कारण बनती है"।[11] "पर्यावरण प्रदूषण का राष्ट्रीय आय पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। कहा जाये तो पर्यावरण की क्षति कुल उत्पादन एवं उत्पादकता को कम कर देती है, अतएव पर्यावरण सुरक्षा राष्ट्रीय महत्त्व का प्रश्न है"।[12]

बाजारवाद, साम्यवाद, और आधुनिकता के बुरे प्रचलन के दौर में हम अपनी संस्कृति को बचाएं। "भारतीय संस्कृति का पर्यावरण चिंतन अतुलनीय है। भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में वृक्ष व वनस्पति को जैसा सम्मान जनक स्थान प्राप्त है, शायद ही दुनिया के किसी अन्य देशों में ऐसा स्थान प्राप्त हो"।[13] "पर्यावरण संबंधी सभी समस्याओं का स्थायी समाधान एक मात्र भारतीय संस्कृति की प्रकृति विषयक आध्यात्मिक चिंतन में है जिसको अपना कर मनुष्य अपने सुख, समृद्धि एवं अस्तित्व के साथ-साथ पर्यावरण को भी सुरक्षित तथा संरक्षित रख सकता है"।[14]

५ निष्कर्षः

भारत में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति की देन है। भारत पर यूनानी, ईरानी, अरबी, फारसी आक्रमणकारी शासकों ने राज किया और भारतीय संस्कृति को क्षिन्न-भिन्न कर दियां भारत कई वर्षो तक अंग्रेजो का गुलाम रहा। पाश्चात्य सभ्यता ने भारत में मानवीय मूल्यों के पतन का मार्ग प्रशस्त कर बाजारवाद को बढावा दिया। आधुनिकता एवं विलासिता की चाह ने पुरातन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को परित्याग करने के लिए प्रेरित कर दिया। आधुनिक भारत में जनसंख्या के बढ़ते दबाव ने प्राचीन पर्यावरण संरक्षण प्रबंधन को तहस-नहस कर दिया। अपने-अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु विकास के नाम पर पर्यावरण के विनाश होना शुरू हो गया। दक्षिण एशिया में भारत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की दृष्टि से पर्यावरण की समस्या के प्रति भारत बहुत सवेदंशील देश है। भारत सरकार पर्यावरण संरक्षण हेतु ठोस प्रयास कर रही है। जनसँख्या नियंत्रण, प्राकृतिक संसाधनों के अंधा-धुंध दोहन पर अंकुश, सतत-संपोषणीय विकास एवं हरित उर्जा के उपयोग पर ध्यान दे रही है। पर्यावरण संरक्षण भारत सरकार की प्राथमिकता है। राज्य सरकार भी इसकी अनुपालना सुनिश्चित

कर रही हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए सरकारी स्तर पर किये जा रहे कार्यों एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिय जरुरी है की देश का हर नागरिक भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं को आगे आने वाली पीढ़ियों में अंतरित करें। हमारी आने वाली संतति भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं को अपनाए और इन्हें संजो कर रखे ताकि वो शुद्ध पर्यावरण में खुशहाल जीवन व्यतीत कर पायें। अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखना प्रत्येक मनुष्य की नैतिक जिम्मेदारी है जिसके उल्लघंन पर जबावदेह बनना ही होगा। सभी सजीवों को स्वच्छ पर्यावरण में जीने का सामान अधिकार है। फिर भी यदि मनुष्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति लापरवाह रहता है तो उसे ऐसे परिणाम भुगतने होंगे जो उसकी बुद्धि से परे होंगे। प्रकृति की ही सर्वोच्च सत्ता है। उदहारण के लिए कोरोना वायरस संक्रमण प्रकृति के साथ अनैतिकता का ही परिणाम है। यूनेप की एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर इंगेर एन्देर्सें के अनुसार ''प्रकृति हमें कोरोना वायरस महामारी के साथ-साथ और आगे आने वाली विपदाओं का सन्देश दे रही है''।

सन्दर्भः

1. निर्मम, डॉ. श्याम, भारतीय संस्कृति में पर्यावरण और वनों की उपयोगिता, पर्यावरण विमर्श, 2012
2. डॉ. आशा, प्राचीन काल में जल स्रोतों को पल्लवित एवं पोषित करने के लिए मानवीय प्रयास, शोध संचयन, भाग9, अंक2, पेज-14, 15 जुलाई, 2018
3. सिंह, करण बहादुर, पर्यावरण संरक्षण-प्रकृति ही एक मात्र विकल्प, कुरुक्षेत्र, पेज-14, जून 2006
4. बैरवा, डॉ. राजेश कुमार, वेदों में पर्यावरण शोधन यज्ञ के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शोधश्री, भाग 5, पेज-25, अक्टूबर-दिसम्बर, 2012
5. अर्थववेद, 12/1/45
6. शर्मा, डॉ. एम. एल.; नरुका, मीना, राजस्थान में वृक्ष पूजा- एक परम्परा, शोधश्री, वर्ष-4, भाग-3 पेज-28, जुलाई-सितम्बर, 2014
7. शेखावत, डिम्पल, पर्यावरण चेतना और संरक्षणः सन्दर्भ एवं प्रवत्तियां, शोधश्री, भाग21, अंक4, पेज-103, अक्टूबर-दिसम्बर, 2016
8. कुमार, डॉ. राकेश, प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा, शोध-संचयन, भाग 1, अंक 1 पेज-4, 15 जनवरी2010
9. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, 11 सितम्बर 2019, twitter@bjp4india
10. आर्या, डॉ. प्रीति, पर्यावरणीय चिंतन और उत्तराखंड के लोक सांस्कृतिक सरोकार, शोधसंचयन, भाग-3, अंक-1, पेज - 3, 15 जनवरी 2012
11. खन्ना, डॉ. मधु, भागवत धर्म में मानवीय चेतनाः पर्यावरण के परिपेक्ष्य में, शोधश्री, भाग 31, अंक 2, पेजन. 15, अप्रैल-जून, 2019
12. ओझा, डॉ. शुक्ला, बीसवीं शाताब्धी में भारत के पर्यावरणीय विधानों का ऐतिहासिक परिक्षण, शोधश्री, भाग 21, अंक 4, पेज- 70, अक्टूबर-दिसम्बर, 2016
13. जैन, सुरेन्द्र कुमार, द्वितीय अध्याय-इक्कीसवीं सदी पूर्व के काव्य में पर्यावरणीय चिंतन, शोध-गंगा, इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिन्दी कविता में पर्यावरणीय चेतना, पेज न० 41, नैनीताल, 2017
14. राव, मनोज, भारतीय संस्कृति में वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं का स्थायी समाधान, देव संस्कृति, भाग 2, पेज- 20-24, 2019